major Semester-1 2025-2029 DATE-04/04/26-

- Psychology is the science of behaviour-

मनोविज्ञान पहले दर्शनशास्त्र का एक अंग था, अतः पहले की परिभाषाएं दार्शनिक थी, मनोविज्ञान अंग्रेजी शब्द Psychology का हिन्दी रूपान्तरण है। जो ग्रीक भाषा के Psycho तथा logous के मेल से बना है। Psyche का अर्थ होता है आत्मा तथा logous का अर्थ होता है। विचार करना, इसीलिए मनोविज्ञान आत्मा का विज्ञान है। वास्तव में आत्मा का कोई निश्चित स्वरूप नहीं होता और न ही इसका प्रयोगात्मक अध्ययन किया जा सकता है। आत्मा और परमात्मा का अध्ययन दर्शनशास्त्र का विषय वस्तु है। इसीलिए, आत्मा को मनोविज्ञान का विषयवस्तु नहीं माना जा सकता है।

मनोविज्ञान की उपयोगिता जीवन के लगभग सभी क्षेत्रों में सिद्ध हो चुकी है। शिक्षा, चिकित्सा, उद्योग, अपराध तथा सब तरह के अनेकों क्षेत्रों में यह अपना स्थान बना चुका है।

मनोविज्ञान को मन का विज्ञान कहा, परिभाषा में भी वही दोष थे, जो आत्मा के विज्ञान में थे। मनोविज्ञान की शास्त्रीय परिभाषा थी, जिससे मनोविज्ञान की विषय-वस्तु स्पष्ट नहीं हो पाता था, 1879 ई० में जब विलियम वुण्ट (William Woundt) ने लिपजिग विश्वविद्यालय में प्रथम प्रयोगशाला की स्थापना की तो मनोविज्ञान धीरे-धीरे दर्शनशास्त्र से अलग-अलग होकर स्वतंत्र विषय के रूप में विकसित होने लगी,

major semester-III 2024-28 DATE - 02/02/2026

## challenges of organisational behaviour.

आज कल के समय में संगठनात्मक व्यवहार को समझना प्रबन्धकों के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण तथा आवश्यक बन गया है। कारण, संगठनों में नाटकीय परिवर्तन तेजी के साथ घटित हो रहे हैं। जिनकी जानकारी के बिना संगठन को समुचित रूप से संचालित करना संभव नहीं है। अतः प्रबन्धकों के दृष्टिकोण से कुछ महत्वपूर्ण चुनौतियाँ अथवा विवेचनात्मक समस्याएँ निम्नलिखित हैं।

(1) सार्वभौमिकता की समस्या — संगठन मात्र राष्ट्रीय सीमा तक ही सीमित नहीं है। बल्कि दूसरे राष्ट्रों में प्रवेश करते जैसे- एक अमेरिकन कम्पनी को विकसित कि मैक्स. आज दूसरे विकासशील राष्ट्र से भारत हो रहा है। यही स्थिति अन्य विकसित राष्ट्रों में देखी जाती है। इस तरह विश्व मानो एक सार्वभौम गाँव बन गया है, ऐसी स्थिति में संगठन के प्रबन्धकों को विभिन्न संस्कृतियों के लोगों के साथ काम करने के योग्य होना आवश्यक बन गया है। वास्तव में प्रबन्धकों के लिए यह एक चुनौती है। कारण यह कि सार्वभौमिकता के परिणामस्वरूप प्रबन्धकों के सामने दो मुख्य विचारात्मक और चुनौतीपूर्ण समस्याएँ उत्पन्न हो जाती हैं। पहली समस्या यह है कि आवश्यकता के अनुसार प्रबन्धकों को अपने राष्ट्र से दूर अन्य राष्ट्रों में जाना है, ऐसे लोगों के साथ व्यवहार करना है जो आवश्यकताओं, आकांक्षाओं, मनोवृत्तियों, रुचियों आदि के दृष्टिकोण से बिल्कुल भिन्न हैं।

(ii) कार्यशक्ति विविधता की समस्या – संगठनों के प्रबन्धकों के सामने एक चुनौतिपूर्ण समस्या कार्यशक्ति विविधता से सम्बन्धित है। एक ही संस्कृति या देश के लोगों में विविधता पायी जाती है। वर्तमान समाज में लिंग, प्रजाति तथा मानवजातीयता के दृष्टिकोण से संगठन की एकरूपता घटती जा रही है और विषमता बढ़ती जा रही है। अतिरिक्त संगठन के कर्मचारियों एवं पदाधिकारियों के मूल्यों, मनोवृत्तियों, विश्वासों, आवश्यकताओं, संभावनाओं तथा कार्य शैलियों में भारी विविधता देखी जाती है। अतः प्रबन्धकों के सामने चुनौती यह है कि वे इस विविधता की पृष्ठभूमि में अपने आप को अधिक से अधिक अनुकूल बनाने का प्रयास करें। वर्तमान समय में अमेरिकन संगठनों में [illegible] कर्मचारी स्त्रियाँ हैं।

(iii) गुण – प्रबन्ध तथा उत्पादकता की समस्या – प्रबन्धकों के समक्ष आज एक चुनौतीपूर्ण समस्या प्रबन्ध के गुण तथा उत्पादकता को उन्नत बनाने से सम्बन्धित है। वर्तमान समय में संगठनों में तेजी के साथ परिवर्तन हो रहे हैं।

(iv) श्रमिक कमी की समस्या :- प्रबन्धकों के समक्ष एक गंभीर समस्या यह है कि श्रमिकों की संख्या लगातार घटती जा रही है। विशेष रूप से कुशल कर्मचारियों की कमी को पूरा करना प्रबन्धक के लिए एक गंभीर चुनौती बन गयी है –

(v) ग्राहक सेवा की समस्या – किसी संगठन की प्रभावशीलता को उन्नत बनाने के लिए ग्राहकों की संतुष्टि भी आवश्यक है। अतः प्रबन्धकों के सामने एक समस्या या चुनौती यह है कि ग्राहकों की संतुष्टि को कैसे बढ़ाया जाये। इस संदर्भ में प्रबन्धकों को इस बात की जानकारी होनी चाहिए।